वेदान्त आश्रम की मासिक ई - पत्रिका
वेदान्त पीयूष
वर्ष २२
नवम्बर - २०२२
प्रकाशन - ११

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

नवम्बर 2022

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

ॐ

सदाशिवसमारम्भाम्

शंकराचार्यमध्यमाम्

अस्मदाचार्यपर्यन्ताम्

वन्दे गुरु परम्पराम्

विषय सूचि

नवम्बर 2022

वपुस्तुषादिभिः कोशैः
युक्तं युक्त्यावघाततः।
आत्मानमन्तरं शुद्धं
विविच्यात्तण्डुलं यथा।।

(आत्मबोध श्लोक 16)

शुद्धस्वरूप आत्मा को पंचकोशों से युक्तिपूर्वक विवेक के द्वारा वैसे ही पृथक् करना चाहिए, जैसे चावल को उसके छिलकों से पृथक् किया जाता है।

पूज्य गुरुजी का सन्देश

संन्यास का तत्त्व

प्रत्येक जीव का जीवन प्रवृत्ति व निवृत्ति प्रधान होता है। जबतक उसका प्रयोजन, उसका वास्तविक अर्थ व उसका पर्यवसान समझ में नहीं आता है, तबतक दोनों ही संसार में उलजाए रखते है। मुक्ति का साधन बनने के बजाय बाधा बनने लगता है। मुक्ति के लिए अन्ततः संन्यास ही आपेक्षित होता है; किन्तु संन्यास में कर्म से निवृत्तिमात्र समझ लिया जाता है, जो कि दोषवान है। प्रवृत्ति से अभिप्राय उत्साहपूर्वक कर्म करना है, तथा निवृत्ति से अभिप्राय कर्म के उपरान्त थकान आदि की वजह से विश्रान्ति को प्राप्त करना है। किन्तु यह निवृत्ति प्रवृत्ति के लिए ही स्वयं को तैयार करने हेतु कुछ समय की उपरामतामात्र है। जब कि संन्यास इतनामात्र नहीं है। वस्तुतः संन्यास में न निवृत्ति है और न ही प्रवृत्ति है। संन्यास के उपरान्त अच्छी प्रवृत्ति के लिए सक्षम बन पाना प्रयोजन नहीं है, किन्तु कुछ जानने की

संन्यास का तत्व

व जगने की प्रधानता होती है। जब कि निवृत्ति में कुछ जानने की प्रधानता नहीं है, किन्तु पुनः प्रवृत्ति हेतु स्वयं को तैयार करना है।

निवृत्ति संन्यास का पर्याय नहीं है, किन्तु निवृत्ति में प्रवृत्ति का बीज निहित है।

संन्यास में कुछ करने वा न करने की पूर्ण स्वतंत्रता, उपलब्धता, सामर्थ्य, उर्जा तथा विवेक है। तथा कुछ करने वा न करने के संकल्प से मुक्ति है। उसके पीछे कारण अपनी समर्थता वा असमर्थता प्रधान नहीं है। किसी भी चीज को अच्छी तरह देखने की वजह से समर्थता के बावजूद उसके बारे में विवेक की वजह से संकल्परहित होना है। निवृत्ति में थकावट तथा असमर्थता वा भय की वजह से प्रवृत्ति का अभाव होता है। संन्यास में अपने आपको रोकने की चेष्टा नहीं है। जैसे बचपन की चीजों का बड़े होने पर महत्व नहीं। वैसे ही संन्यस्तता में उस विषयक असारता का ज्ञान होने की वजह से वह महत्वविहीन हो गया है। अतः किसी एक कर्म को छोडकर अन्य कर्म का आश्रय नहीं लेना है। जो कि निवृत्ति में एक प्रवृत्ति छोड़कर अन्य की

संन्यास का तत्व

सम्भावना है अर्थात् निवृत्ति में प्रवृत्ति का बीज निहित होता है।

संन्यास को समझने के लिए प्रवृत्ति का अर्थ व प्रयोजन समझना आवश्यक है। प्रवृत्ति से अभिप्राय वह कर्म है, जिसके द्वारा परिवर्तन लाया जाता है। जिसके अन्तर्गत आप्य, उत्पाद्य, संस्कार्य और विकार्य आते है। यह परिवर्तन बाहर भी हो सकता है और आन्तरिक भी। इसीके लिए धर्माचरण का आश्रय अर्थात् ईश्वरकेन्द्रित जीवन होता है। जहां बाह्य परिवर्तन की अपेक्षा नहीं किन्तु मन के धरातल पर सात्विकता उत्पन्न करना है। ऐसी प्रवृत्ति ही ज्ञान के लिए पात्र बनाती है। जब यह बात दीख जाती है कि किसी भी कर्म को करे, कर्म से चाहे स्वर्गादि इष्ट का भी निर्माण कर लें तो भी उसका स्थायित्व नहीं है। कर्मफल सदैव नश्वर होता है। वस्तुतः प्रवृत्ति वा निवृत्ति तथा उसके द्वारा उपलब्धि होना वा न होना समस्या नहीं किन्तु उसके पीछे उसका करनेवाला कर्ता-भोक्ता रूप जीव समस्या है। जब तक जीवभाव बना रहेगा

संन्यास का तत्व

तब तक जीवन भर चेष्टाएं चलती रहेगी, किन्तु सब नश्वर ही होगा। संन्यास इसके प्रति संवेदना कि प्रत्येक प्रवृत्ति अन्ततः हमें उलजाएं रखती है। प्रवृत्ति वा निवृत्ति के धरातल पर जीने से यह ही चिन्तन चलता है कि कैसे कर्म करें? कुछ भी करके तृप्त होना यह रोगी होने का लक्षण है। स्वस्थता बाहर किसी उपचार से नहीं होती। अतः बन्धन के स्वरूप का शोध किया जाता है। स्वस्थता किसी परिस्थिति की वजह से नहीं आती है, और न खतम होती है, किन्तु अज्ञान व अविवेक से जुडी है। मूल समस्या जीवभाव से तादात्म्य है, स्वयं को जीव समझना समस्या है। जीव रहने के उपरान्त ही प्रवृत्ति–निवृत्ति अन्तहीन चलती रहती है।

संन्यास सदैव विवेकजनित होता है।

संन्यास सदैव विवेकजनित ही होता है। संन्यास का मूल प्रयोजन जीवभाव से निवृत्ति है। यह ही लक्ष्य है। जिसने जीवन में यह लक्ष्य रखा, उसके उपरान्त यह दीखता है कि जीवभाव की समाप्ति के लिए प्रवृत्ति–निवृत्ति कैसे सहायक होती है? उनमें अब कर्म का महत्व नहीं रह गया। संन्यासी प्रवृत्ति–निवृत्ति के रहस्यों से अवगत है। उसे जीव के तूणीर का एक

संन्यास का तत्व

बाण समझता है। व्यक्ति होकर जीने के उपरान्त का यह साधन है। वह समर्थ और स्वस्थ होने पर भी उसमें रुचि नहीं रखता है, किन्तु जीवन के परं लक्ष्य की प्राप्ति की प्रेरणा रखता है। संन्यासी मूल समस्या को जड़ से निकालने के लिए आतुर है कि जहां कुछ परिवर्तन आपेक्षित नहीं। एवं संन्यासी की प्रवृत्ति–निवृत्ति क्षुद्रता व असमर्थता से रहित होने की वजह से इन दोनों में धन्यता की सुगन्ध आती है। उनमें विवेक और वैचारिक मन्थन होता है। अतः यह समझना आवश्यक कि कर्म का प्रयोजन निवृत्त करने के लिए नहीं, किन्तु संन्यस्त करने के लिए होता है। संन्यासी अत्यन्त जीवन्त होता है, जिनमें शोध, ध्यान व जाग्रति की रुचि है। यह ही भगवान के द्वारा सांख्य के नाम से बताई गई दूसरी ज्ञान –प्रधान निष्ठा है। कर्मप्रधान निष्ठा मन को संन्यस्त करके ज्ञान के लिए पात्र बनाती है। ज्ञान के लिए पात्रता होना ही कर्मयोग का मूल प्रयोजन तथा कर्मक्षेत्र की उपलब्धि है। ऐसी ज्ञान की पात्रता ही कर्म का अदृष्ट फल भी है। यही संन्यास का रहस्य है।

वेदान्त लेख
अहम् ब्रह्मास्मि

धर्म्यस्वरूप अध्यात्मज्ञान

वैदिकदर्शन में मनुष्यजीवन के चार पुरुषार्थ के अन्तर्गत सर्वप्रथम पुरुषार्थ धर्म को रखा गया। जीवन में धर्माचरण का अत्यन्त महत्व है। धर्म का आचरण से न केवल इष्टलक्ष्यों की सिद्धि होती है, किन्तु मोक्षरूप परंपुरुषार्थ के लिए पात्रता जगती है। इसका आरम्भ स्वकेन्द्रिता से मुक्त होकर ईश्वरकेन्द्रित जीने से होता है। अन्ततः इसका आधार अध्यात्मज्ञान ही होना चाहिए। इसीलिए अध्यात्म को ही धर्म्य बताया जाता है। सत्य, अहिंसा, विवेकादि के रहस्य भी अध्यात्म से ही स्पष्ट होते है। धर्म्य का अभिप्राय अन्ततः स्वस्वरूप के वास्तविक ज्ञान है। अध्यात्मलक्ष्य के अभाव में धर्मविषयक तथा अन्य समस्त प्रकार के मोह की सम्भावना होती है। जिस समय अध्यात्म लक्ष्य की विस्मृति होती है, तब धर्माचरण आदि के पालन में अहं की संतुष्टि प्रधान हो जाती है।

धर्म का आधार सदैव अध्यात्मज्ञान ही होना चाहिए।

धर्मस्वरूप अध्यात्मज्ञान

वेदों के द्वारा विविध प्रकार के कर्म का प्रतिपादन किया गया है। जिसमें कुछ काम्यकर्म आदि का भी समावेश होता है। किसी भी कर्म के सम्पन्न होने पर दो प्रकार के फल की सिद्धि होती है 1. दृष्टफल 2. अदृष्टफल। जो दृष्टफल से ही प्रेरित होकर धर्माचरण करता है; वहां उसके अनेकों लाभ तो दीखाई देते है, किन्तु उससे धर्म का समन्वय नहीं हो पाता और अर्जुन की तरह अपने कर्तव्य का विरोध दीखाई देता है। धर्मसंकट का समाधान नहीं दीखता है। वह धर्मनिष्ठ व्यक्ति के लिए जीवन का एक ऐसा मोड़ होता है कि जहां वह धर्म के साथ या तो समझौता कर लेता है वा शोक की गर्त में डूब जाता है किन्तु अध्यात्मदृष्टि से देखने पर दृष्टफल गौण तथा अध्यात्मलक्ष्य प्रधान होता है। अन्यथा धर्माचरण में अहं की संतुष्टि प्रधान हो जाती है। ऐसी ही परिस्थिति अर्जुन के सामने निर्मित हुई कि जहां शोक की गर्त में डूबा हुआ अर्जुन धर्म का निश्चय नहीं कर पा रहा था और ऐसे धर्म संकट से घिरा अर्जुन भगवान के समक्ष अपनी धर्म विषयक मोह की समस्या को प्रस्तुत करता है। इसके पीछे भी अर्जुन की दृष्टवस्तु की कसौटी ही कारण थी।

धर्म्यस्वरूप अध्यात्मज्ञान

अतः भगवान ने अध्यात्म का परिचय दिया। जिसके पालन से अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सिद्धि होती है, तथा अन्य का भी कल्याण होता है; वह धर्म है। प्रबुद्धता और आन्तरिक जाग्रति ही अध्यात्म है। अध्यात्म ही अदृष्ट की पराकाष्ठा है। अदृष्ट की दुनिया में ही अनेकों प्रकार के लोक, पाप-पुण्य, अन्तःकरण की निर्मलता, गुणों का खेल, बन्धन-मोक्ष, ज्ञान-अज्ञान होते है। गीता में धर्म का औचित्य अध्यात्मदृष्टि से ही प्रतिपादित किया गया है। उससे कभी भी मोह प्राप्त नहीं होता।

धर्माचरण को अध्यात्मजाग्रति के लिए साधन समझते है, वे निष्कामता से युक्त, किसी भी परिस्थिति में धर्म को नहीं त्यागते। उसीसे चित्तशुद्धि होती है। धर्माचरण साधनमात्र है, जिससे दृष्ट की अवश्य सिद्धि होती है, किन्तु साथ ही ऐसे अदृष्ट की भी सिद्धि होकर इस परंलक्ष्य के लिए पात्र बन जाते है। वही वैराग्य का हेतु बनता है। गीता के उपदेश के अन्त में धर्माचरण के लिए अध्यात्म का परिचय मिलता है। धर्म का प्रयोजन निःश्रेयस की सिद्धि के लिए होने से धर्माचरण के निश्चय का आधार अध्यात्मलक्ष्य ही होना चाहिए। इसीलिए अध्यात्मलक्ष्य को धर्म्य की संज्ञा दी जाती है।
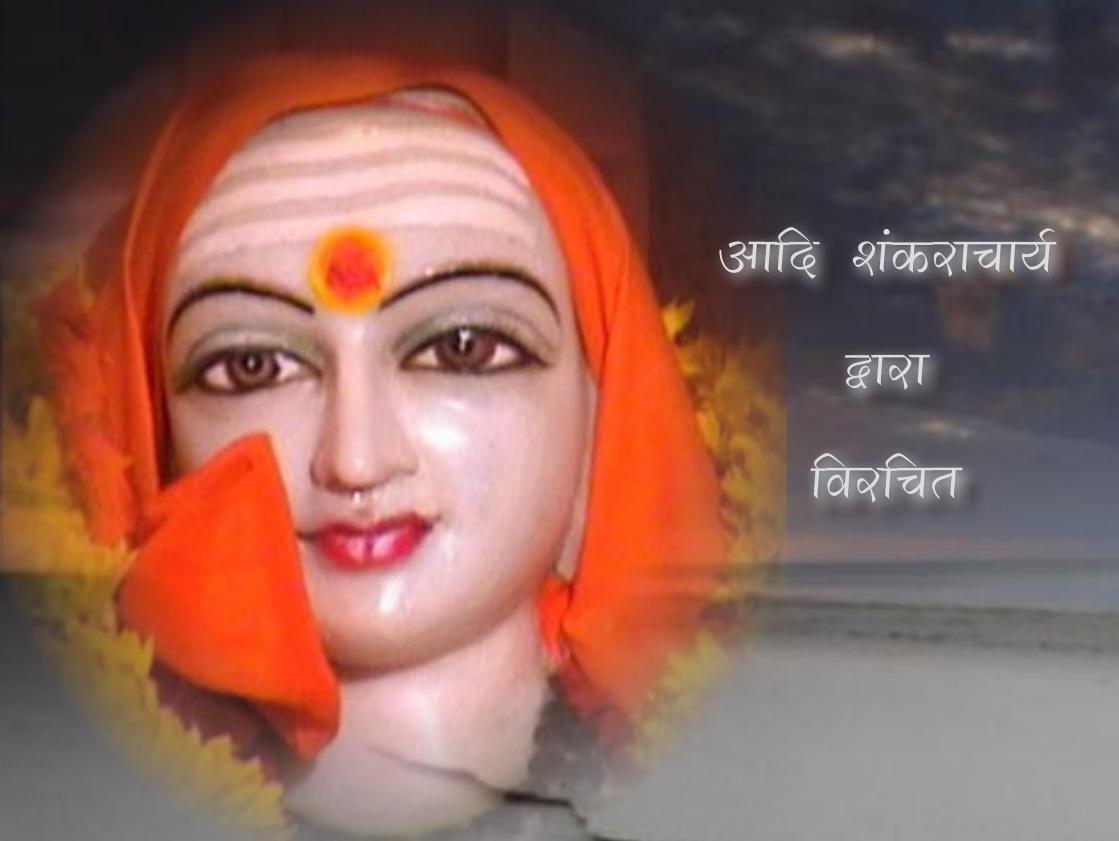
लघु वाक्यवृत्ति

श्रुतिस्मृतिपुराणानां आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम्।।

नष्टे पूर्वविकल्पे तु
यावदन्यस्य नोदयः।
निर्विकल्पक चैतन्यं
स्पष्टं तावद्विभासते।।

जब पूर्व वृत्ति नष्ट हो चुकी हो, तथा दूसरी वृत्ति अभी उत्पन्न नहीं हुई हो, उस समय इन दोनों वृत्तियों के मध्य में निर्विकल्प चैतन्य स्पष्टरूप से भासित होता है।

लघु वाक्यवृत्ति

पूर्व श्लोक में आचार्य ने बताया कि जैसे मोतियों से आवृत्त सूत्र दो मोतियों के बीच में निरावृत्त दीखता है, वैसे ही बुद्धि की समस्त वृत्तियों से व्याप्त चेतनता दो वृत्ति के मध्य में निर्विघ्न दीखाई देती है। इन वृत्ति और उसमें व्याप्त चेतना का विवेक करके उस अविकारी सूत्र को देखना चाहिए।

'प्रत्येक बुद्धिवृत्ति में चेतनता मोतियों की माला के सूत्रवत् व्याप्त होती है।

जाग्रत अवस्था में एक जीव सतत अन्त:करण में किसी न किसी जगद्विषयक वृत्ति का अनुभव करता है। बाह्य विषयों के महत्व का भी कारण सतत बहिर्मुखता होना है। जिसमें उन-उन विषयों को अनित्य जानकर उसकी असारता का निश्चय किया है, उसका मन शान्त और समाहित हो पाता है। अन्तर्मुख होकर विवेक करने के लिए शम: अर्थात् मनोनिग्रह का सामर्थ्य होना चाहिए।

लघु वाक्यवृत्ति

मन में उठती विविध वृत्तियां किसी न किसी विषय पर आश्रित होने से स्वयं जड़ है। किन्तु अन्त:करण में चेतनता की छाया से युक्त होने पर वह जीवन्त हो उठती है। वृत्ति के आने पर उससे तादात्म्य करके हम किसी न किसी रोल को धारण कर लेते है। जैसे दृश्याकार वृत्ति होने पर हम दृष्टा, शब्द विषयक वृत्ति होने पर श्रोता आदि बन जाते है।

जिन विषय की वृत्ति आती है, वह विषय देश-काल से संकुचित होने के कारण उसकी वृत्ति भी समाप्त हो जाती है। वृत्ति से रहित अन्त:करण तब तक रहता है, जब तक अन्य विषय के हम कोन्शियस नहीं होते है अर्थात् अन्य विषयक वृत्ति नहीं जगती है। आचार्य यहां बताते हैं कि जब एक वृत्ति शान्त होती है और दूसरी वृत्ति का अभी उदय नहीं हुआ है।

लघु वाक्यवृत्ति

तब उन दो वृत्तियों के मध्य का अन्तराल निर्वृत्तिक होता है। उन निर्वृत्तिक स्थिति में एक मात्र चेतनतत्त्व शुद्ध अर्थात् निर्विकल्प रूप से विराजमान है।

जिस समय शब्दादि आकार वृत्ति होती है, तब हम श्रोतादि होते है। किन्तु इन विषयाकार वृत्ति के अभाव में हम श्रोतादि किसी भी रोल में बद्ध नहीं है। उस समय हम क्या है? उसे देखना चाहिए। उस समय हम 'कुछ' है; ऐसा नहीं है। किन्तु हमारा शुद्ध चैतन्य स्वरूप होना स्पष्ट भासित होता है। यह ही निर्विकल्प चैतन्य हमारा अर्थात् त्वं पद का लक्ष्यार्थ है। यही हमारी वास्तविकता है। अपने मन को शान्त करके उसके कोन्शियस होकर देखना चाहिए।

गीतासु गीता कर्तव्या
किं अन्यै शास्त्रसंग्रहैः।।

गीता का अधिकारी

गीता का अधिकारी

प्रत्येक जीव अज्ञान में रहते हुए स्वयं को एक संकुचित, जन्मादिवान्, असुरक्षित अनुभव करता है। इससे मुक्ति हेतु विविध बाह्य विषयों पर आश्रित होकर उससे सुख, सुरक्षा व पूर्णता की अपेक्षा करता है। उसीके परिणामस्वरूप राग–द्वेष, आसक्ति आदि से युक्त पराधीनता का जीवन जीने को विवश होता है और सतत जन्मादियुक्त संसरण को प्राप्त करता है। समस्त वेदान्तशास्त्र का लक्ष्य ऐसे जीव को संकुचिता, अपूर्णता से परे अपने सत्यरूप ब्रह्मस्वरूपता में जाग्रति है। अर्थात् जीव की यात्रा जीवत्व से ब्रह्मस्वरूपता में जाग्रति तक की है। इसके लिए शास्त्र के द्वारा दिशा व मार्गदर्शन प्राप्त होते है। वस्तुतः हम ब्रह्म ही है, अतः ब्रह्मस्वरूपता में जगने के लिए किसी कर्म आदि चेष्टा की आवश्यकता नहीं है, किन्तु जाननामात्र है। स्वरूप में जाग्रति का लक्षण है कि स्वयं संकुचित, असुरक्षित जीव की

गीता का अधिकारी

अस्मिता से मुक्त होकर जीते है। समस्त शास्त्र का प्रयोजन व्यक्तित्व से रहित, व्यक्तित्व से परे स्वस्वरूप में जगाना है।

उसके लिए मूल प्रमाण तो उपनिषद् ही है। वेदान्त के साधक को ज्ञान प्राप्त करके, ज्ञान की स्पष्टता हेतु वेदान्त के तीन प्रस्थान का अध्ययन करना होता है। यह तीन प्रस्थान है 1. उपनिषद् 2. ब्रह्मसूत्र 3. श्रीमद् भगवद्गीता। उपनिषद् इसमें पहला प्रस्थान है। उसमें महावाक्य के द्वारा अखण्डता का बोध करके जीव-ब्रह्म का ऐक्य दर्शाया जाता है। उपनिषद् के अन्य अवान्तर वाक्य होते है, जो इस महावाक्य के अर्थ को समझाने के लिए ईश्वर, जीव आदि के वाच्यार्थ को द्योतित करते है। 2. प्रस्थान वेदव्यासजी द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र है। इसमें उपनिषद् में प्राप्त वेदान्त के सिद्धान्त को युक्तिपूर्ण ढंग से समझाते है तथा जहां विरोध प्राप्त होता है, उसका समन्वय करना इसका प्रयोजन है। तीसरा प्रस्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण श्रीमद् भगवद्गीता है।

'भगवान के अवतार के जीवन से जीवन्मुक्त की स्थिति ज्ञात होती है।'

गीता का अधिकारी

श्रीमद् भगवद्गीता भगवान के द्वारा शोकाकुल अर्जुन को युद्ध के मैदान में दिया गया उपदेश है। गीता का विषय और अधिकारी दो प्रकार से देखा जा सकता है। एक तो भगवान की दृष्टि से, 2 अर्जुन अर्थात् जीव की दृष्टि से। अर्जुन एक संसार के अन्तर्गत विद्यमान संकुचित अस्मिता से युक्त जीव है। अर्जुन को जब अपने अज्ञान का एहसास हुआ कि हम सत्य को नहीं जानते है और आज का हमारा ज्ञान दोषवान है। शोकादिपूर्ण संसार ऐसे भ्रान्तिपूर्ण ज्ञान का ही परिणाम है। अपने इस अज्ञान की स्वीकृति की वजह से विनम्रता से युक्त वह भगवान के प्रति शरणागत और सत्य का जिज्ञासु बना। सत्य को जानने की तीव्र प्रेरणा में जिसकी अन्य समस्त इच्छाएं गौण हो चूकी है। किन्तु साथ ही मनोस्थिति शान्त, सूक्ष्म, सन्तुलित नहीं है। जगद्विषयक अनेकों मोह विद्यमान है। यह राग-द्वेष, आसक्ति का हेतु है। ऐसे मनमें स्वाभाविक बहिर्मुखता भी है, तथा ज्ञान के लिए पूर्णतः उपलब्धता नहीं है। अतः ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने पर भी उसका लाभ नहीं हो सकता है।

गीता का अधिकारी

ऐस व्यक्ति को कर्मक्षेत्र से विमुख होना कल्याण ाकरी नहीं किन्तु विनाश का ही हेतु सिद्ध होगा। अतः कर्मक्षेत्र में रहते हुए अपने अन्दर कुछ दृष्टि, मूल्यादि का परिवर्तन आपेक्षित है। इस अज्ञान की निद्रा से ब्रह्मस्वरूपता में जाग्रति हेतु जो भी मूल्यादि आवश्यक है; उसका व्यव में समावेश तथा उसमें बाधक मूल्य व दृष्टि में परिवर्तन करके जीने की कला का नाम धर्माचरण है। उसीसे ज्ञान की पात्रता होती है। इस धर्माचरण की कला गीता सीखाती है। अर्थात् गीता का एक अधिकारी अज्ञानी, जिज्ञासु किन्तु कर्म का अधिकारी साधक है।

दूसरा अधिकारी वह है कि जिसने ज्ञान तो प्राप्त किया है। उनमें यह निश्चय भी हो गया है कि सब कुछ मिथ्या है और हम ब्रह्म ही है। किन्तु इस ईश्वर की माया के द्वारा अभिव्यक्त नामरूप की प्रतीति प्रारब्धपर्यन्त बनी रहती है। ऐसे नामरूपात्मक जगत में अपनी ब्रह्मस्वरूपता में अबाधितरूप से निष्ठ रहते हुए कैसे जीया जा सकता है। जो स्वयं भगवान अवतार लेकर, तथा ज्ञानवान इस जगत के मध्य में कैसे पूर्णस्वरूपता में निष्ठ होकर जीते है–उसे दीखाती है। एवं दो प्रकार के विषय–अधिकारी को देख सकते है।
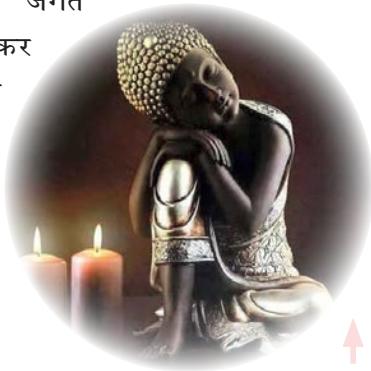
(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री लक्ष्मण चरित्र

— २४ —

बन्दउं लछिमन पद जल जाता। सीतल सुभग भगत सुखदाता॥
रघुपति कीरति बिमल पताका। दण्ड समान भयउ जस जाका॥

श्री लक्ष्मण चरित्र

श्रीराम के रावण से, लंका के युद्ध में विजय–श्री का सर्वाधिक भाग लक्ष्मण के ही पुरुषार्थ का परिचायक है। मेघनाद एक ऐसा अप्रतिम योद्धा था जो पूरे जीवन में कभी किसी से पराजित नहीं हुआ था। ऐसा दावा रावण के विषय में कभी नहीं किया जा सकता था। रावण को अपने इस पुत्र पर जो अगाध विश्वास था वह यथार्थ तथ्यों पर ही आध ाारित था। उसके वध का महान् कार्य रामानुज को छोड़कर कौन कर सकता था। श्रीराम इस विषय में पूरी तरह आश्वस्त थे, इसीलिए उन्होंने निकुम्भिला स्थल पर लक्ष्मण को भेजते हुए निश्चयात्मक शब्दों में आदेश दिया।

लक्ष्मणजी को भी आत्मविश्वास था, उन्हें अपनी विजय में रंचमात्र सन्देह नहीं था। साक्षात् महादेव भी आज मेघनाद की रक्षा नहीं कर सकते, यह उनका

श्री लक्ष्मण चरित्र

उद्घोष था। उन्होंने प्रतिज्ञा की; यदि सैकड़ों शंकर भी उसकी रक्षा करें तो भी मैं रघुवीर की शपथ लेता हूं कि उसका वध किए बिना न लौटूंगा। उनका संकल्प साकार हुआ। मेघनाद की मृत्यु ही लंका की वास्तविक पराजय थी।गोस्वामीजी ने लक्ष्मण की भुजा की तुलना सेतु से करते हुए कहा कि लंका के युद्ध–समुद्र में प्रभु श्री लक्ष्मण की भुजा–रूपी सेतु के द्वारा ही पार जा सकें।

लंका–विजय के पश्चात् प्रभु प्रिया और इस अनोखे अनुज के साथ अवध की पावन भूमि में लौट आते हैं। उस अवसर पर अपने चरणों में प्रणत लक्ष्मण को देखकर महाभावमयी सुमित्रा अम्बा विह्वल हो उठी थीं। उन्होंने लक्ष्मण को वनयात्रा के आरम्भ में जो उपदेश दिया था, वह सौमित्र के जीवन मं अपने समग्र अर्थो में साकार हो चुका था। इससे बढ़कर सुमित्रा अम्बा के लिए गर्व की बात क्या हो सकती थी? इस प्रभु के अनन्य पुत्र को हृदय से लगाकर वे स्वयं में भी गर्व का अनुभव करती हैं।

– २७ –

उत्तरकाशी
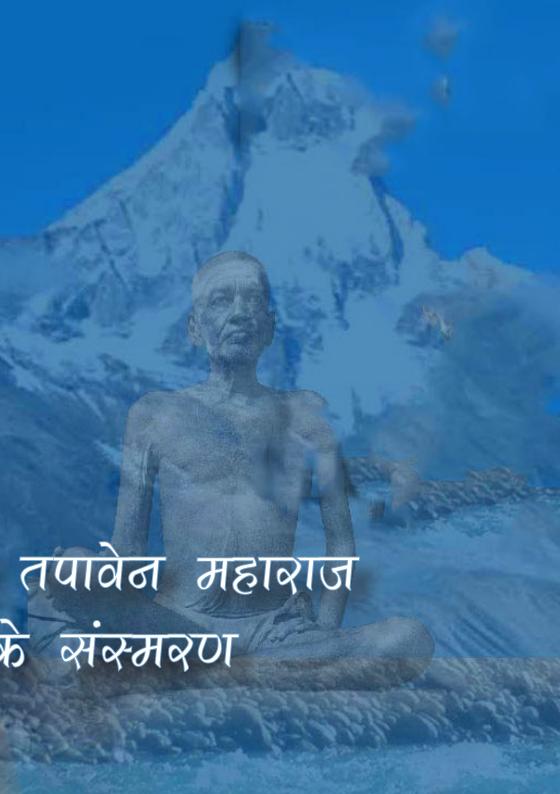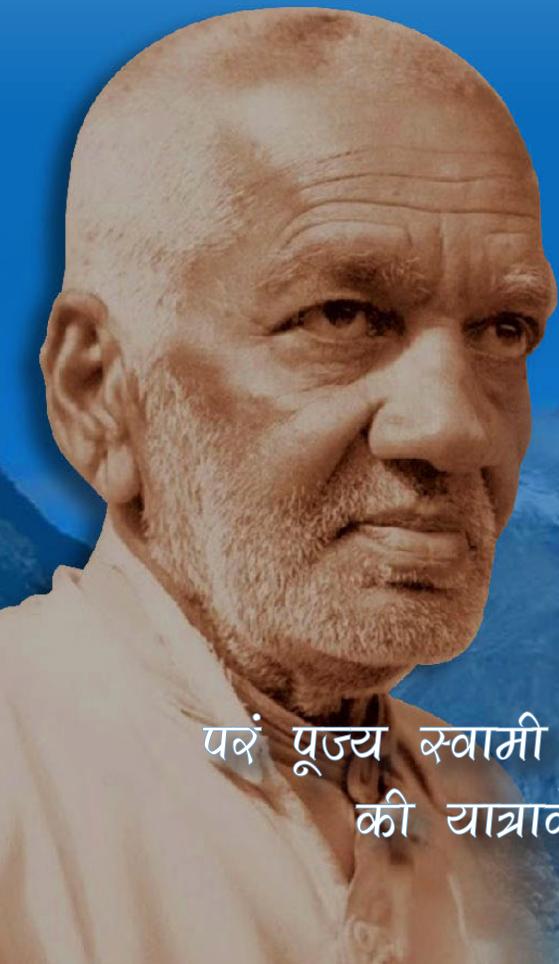
परं पूज्य स्वामी तपोवन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

गंगा के उस पार टहरी नरेश की मुख्य राजध ारी ‘टहरी’नामक नगर स्थित है। नगर करने से उसे बहुजन समाकुल और बहुत ही परिष्कृत कोई महानगर नही समझना चाहिए। थोडे से लोगों, इने गिने मकानों , थोडे से व्यापारों और व्यवहारोंके साथ यह एक छोटा सा प्रशांत नगर है। वह अनाडंबर एवं अविस्तृत होने पर भी बडा ही रमणीय है। उँचे पर्वतों से आवृत भागीरथी गंगा तथा उसकी पोषक नद ‘विल्लंगणा’ गंगा के बीच, समुद्र की सतह से दो हजार दो सौ पचहत्तर फुट उँचाई पर स्थित यह पर्वतनगर प्रकृति शोभा के क्रीडा स्थल के रूप में विराजित है। उत्तरकाशी की ओर यात्रा करनेवालों को गंगा पार कर टहरी

जीवन्मुक्त

नगर में प्रवेश करनेकी आवश्यकता नही होती, तो भी मैं केवल कौतुहलवश यहा जाकर रहा था।

प्रख्यात स्वामी रामतीर्थजी ने अमेरिका की यात्रा से लौटकर इसी टहरी नगर में अपने अन्तिम दिन व्यतीत किये थे। विल्लंगणा नदी के किनारे एक कुटीर में वह रहा करते थे और इसी नदी में उन्होंने अपने शरीर का परित्याग किया था। इस मार्ग से आते जाते इस प्रदेश में पहुँच जाने पर स्वामी रामतीर्थजी और उनके शोचनीय अंत के बारे में विषाद की कुछ तरंगे मेरे अन्तकरण में उठा करती है। अंग्रेजी में लिखी उनकी एक जीवनी के द्वारा केरल में रहते हुए भी वे मेरे लिए सुपरिचत थे। फिर भी उनके संन्यास जीवन आदि का इतिहास सच्चे और विशद रूप में समझने का अवसर मुझे यहीं मिल सका था।

पौराणिक गाथा

गणेशजी का प्राकट्य

गणेशजी का प्राकट्य

भगवान शिवजी समाधिस्थ थे, उस समय माता पार्वती ने अपने अकेलेपन को मिटाने के लिए अपने शरीर के उबटन से एक बालक का निर्माण करके उनमें प्राण डाल दिएं और उसे गणेश नाम दिया। उसके प्रति अपने वात्सल्य को न्योच्छावर करते हुए उनकी बाललीला का आनन्द लेती रही।

एकबार माता पार्वती स्नान के लिए जा रही थी। तब गणेश को कहा कि, 'पुत्र! हम स्नान करने जा रहे हैं, अतः यह ध्यान रखना कि कोई अन्दर न आने पाएं। गणेशजी ने माता की आज्ञा को शिरोध ाार्य करकके वहीं पर रखवाली करने बैठ़ गएं। उतने में स्वयं महादेवजी समाधि से उठ़कर वहां आ पहुंचे और वे देवी पार्वती के भवन की ओर जाने लगें। यह देखकर गणेश ने उन्हें विनयपूर्वक रोकने

गणेशजी का प्राकट्य

का प्रयास किया।

शनैः शनैः विनय को त्यागकर अभिमान से युक्त अत्यन्त हठ़ पर उतर आएं। नन्दी तथा अन्य गणों ने उन्हें समझाने का अत्यन्त प्रयास किया किन्तु सब विफल रहें। बालक की ऐसी उद्दण्डता व अभिमान देखकर महादेवजी ने उसका गर्वभंग करना चाहा। अतः उन्होंने क्रोधित होकर अपने त्रिशून से उन पर प्रहार कर दिया और सिर को धड़ से अलग कर दिया।

गणेश की दर्दनाक चीख सुनकर माता पार्वती दौड़ी चली आई और अत्यन्त शोकाकुल व क्रोधित हो उठ़ी। उनके क्रोध से पूरी सृष्टि में अत्यन्त हाहाकार मच गया। तब सभी देवताओं ने मिलकर उनकी स्तुति की और बालक को पुनर्जीवित करने हेतु महादेव से निवेदन किया। तब महादेवजी के कहने पर भगवान

गणेशजी का प्राकट्य

विष्णु हाथी का सिर लेकर आएं और उस बालक के धड़ पर रखकर उने जीवित कर दिया। उन्हें अपने दोष का एहसास हुआ और विनम्र होकर महादेवजी से क्षमा मांगने लगें। तब भगवान शिव तथा अन्यदेवताओं ने माता पार्वती को प्रसन्न करने के लिए अनेकों आशीर्वाद तथा शक्तियां प्रदान की। इस प्रकार भगवान गणेश का प्राकट्य हुआ।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

मिशन समाचार

मिशन समाचार
गीता प्रवचन
सोमानी भवन, ऋषीकेश
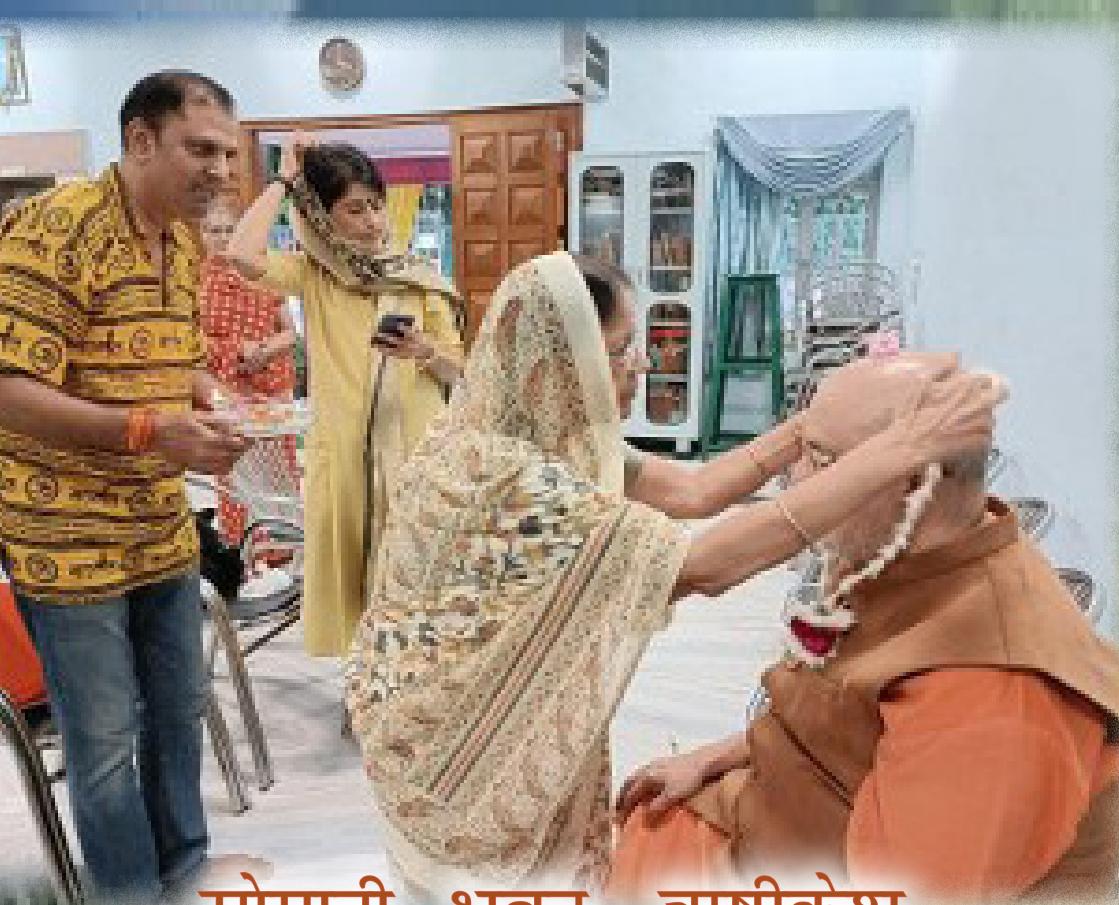
मिशन समाचार
गीता प्रवचन
ॐ
गीता प्रवचन
स्वामी आत्मानंद सरस्वती
अध्याय 12 'भक्ति योग'
वेदान्त आश्रम-इंदौर

मिशन समाचार
गीता प्रवचन
सोमानी भवन, ऋषीकेश

मिशन समाचार
गीता प्रवचन
सोमानी भवन, ऋषीकेश

मिशन समाचार
गीता प्रवचन
गीता प्रवचन
आत्मानंद सरस्वतीजी
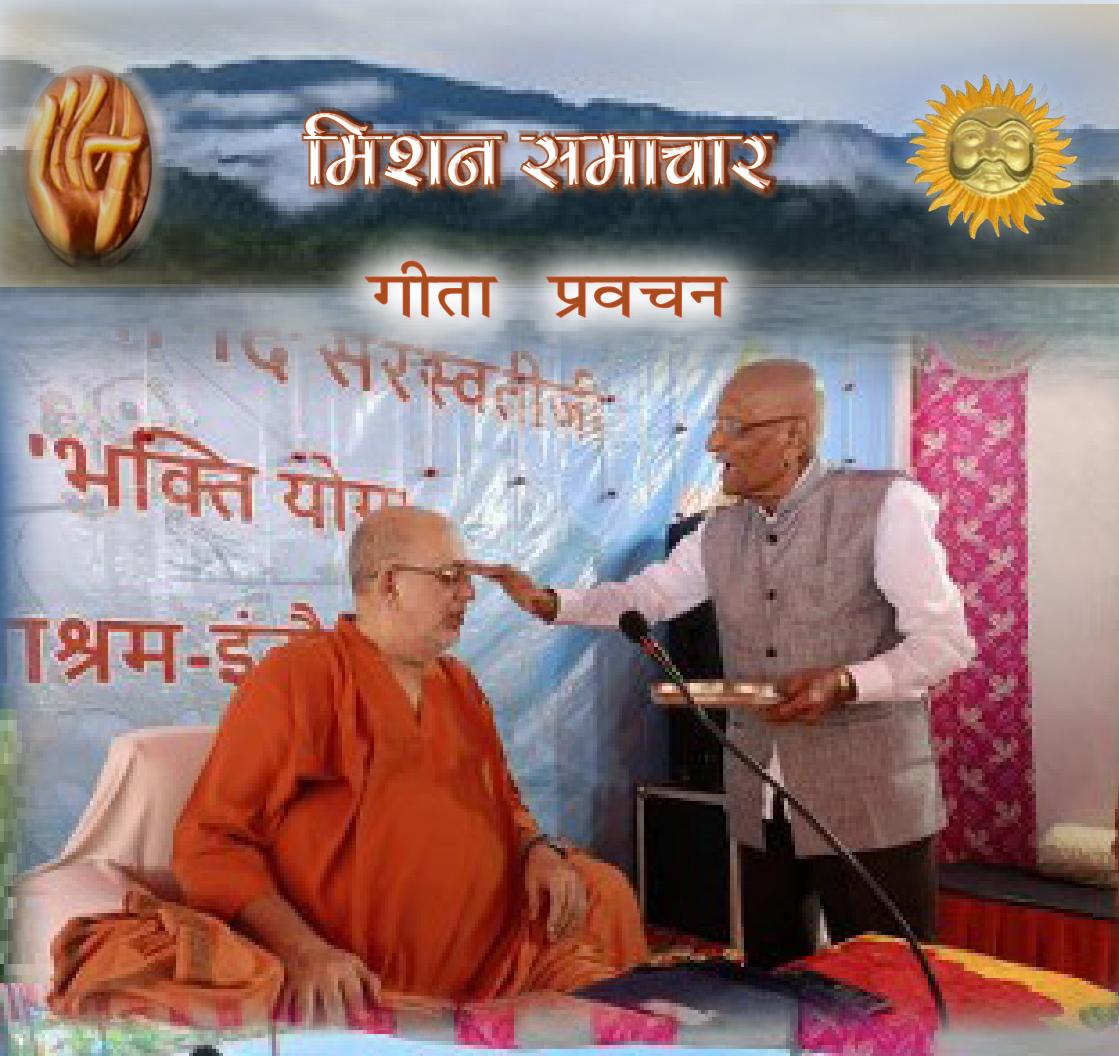
मिशन समाचार
नमामि गंगे

मिशन समाचार
दीप दान

मिशन समाचार
गंगा स्नान
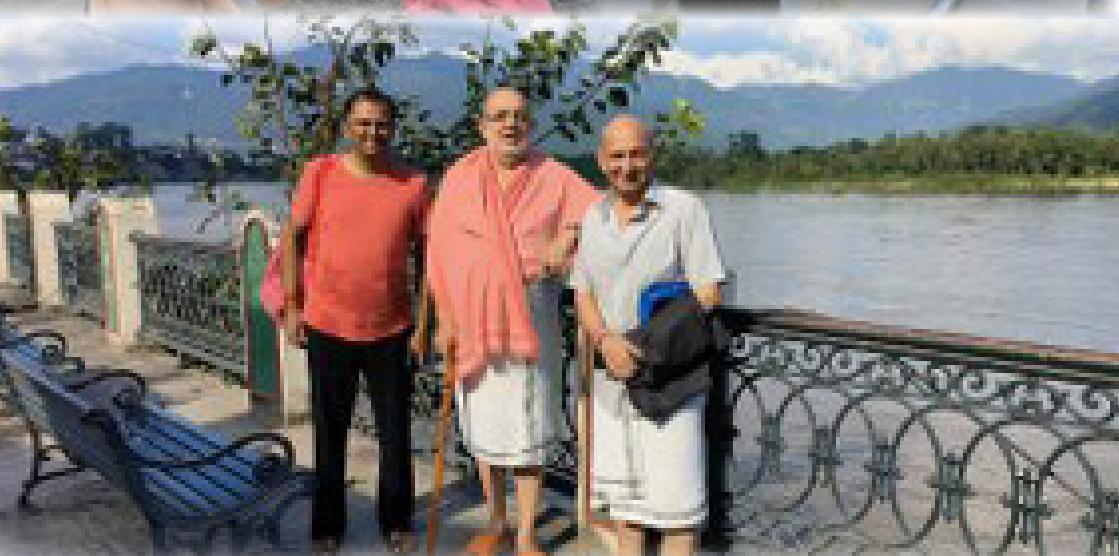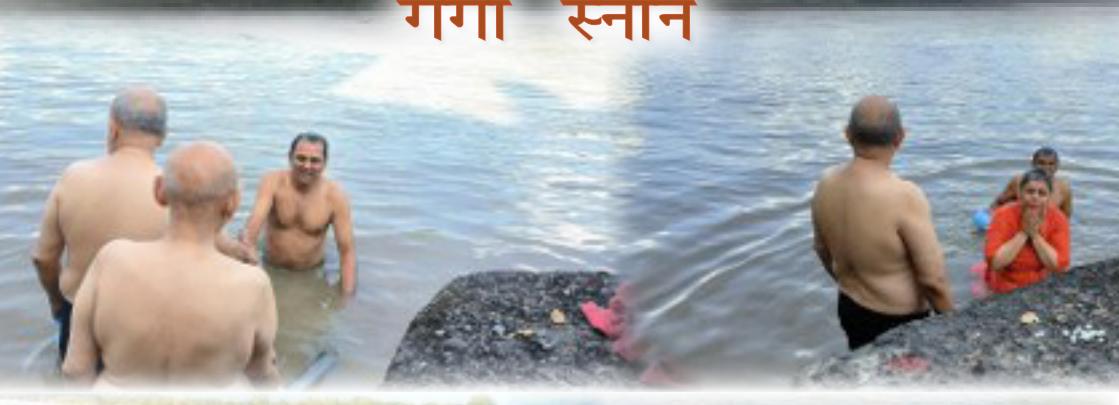
मिशन समाचार
भोज यज्ञ
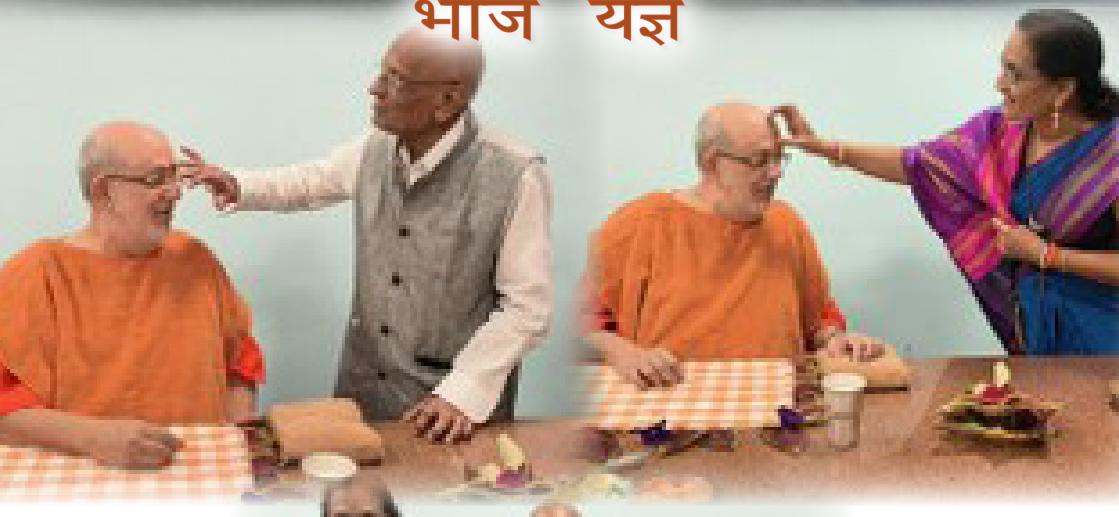
मिशन समाचार
ऋषीकेश विहगसृष्टि

मिशन समाचार
विष्णुसहस्रनाम अर्चना

मिशन समाचार
विष्णुसहस्रनाम अर्चना
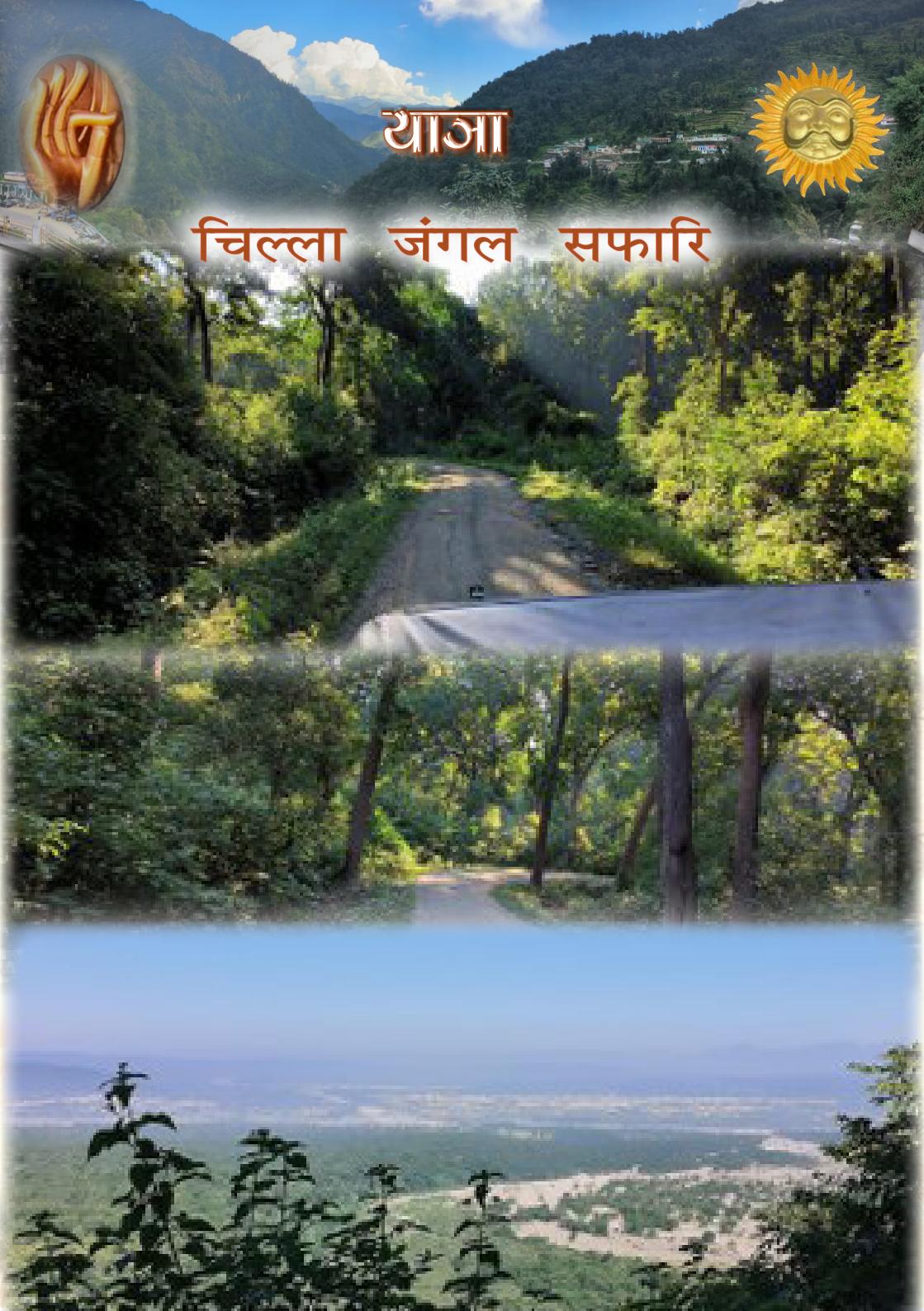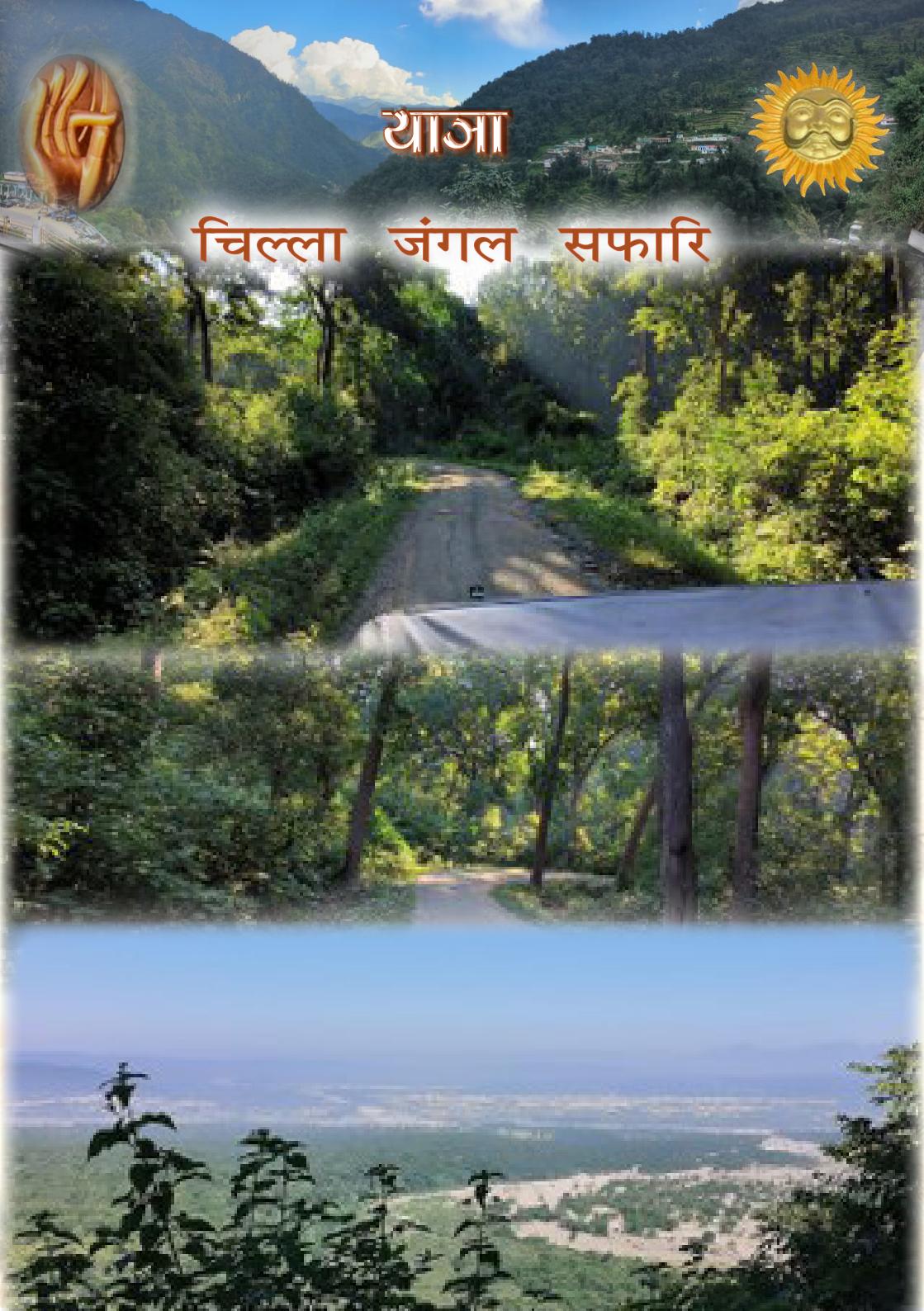
यात्रा
चिल्ला जंगल सफारि
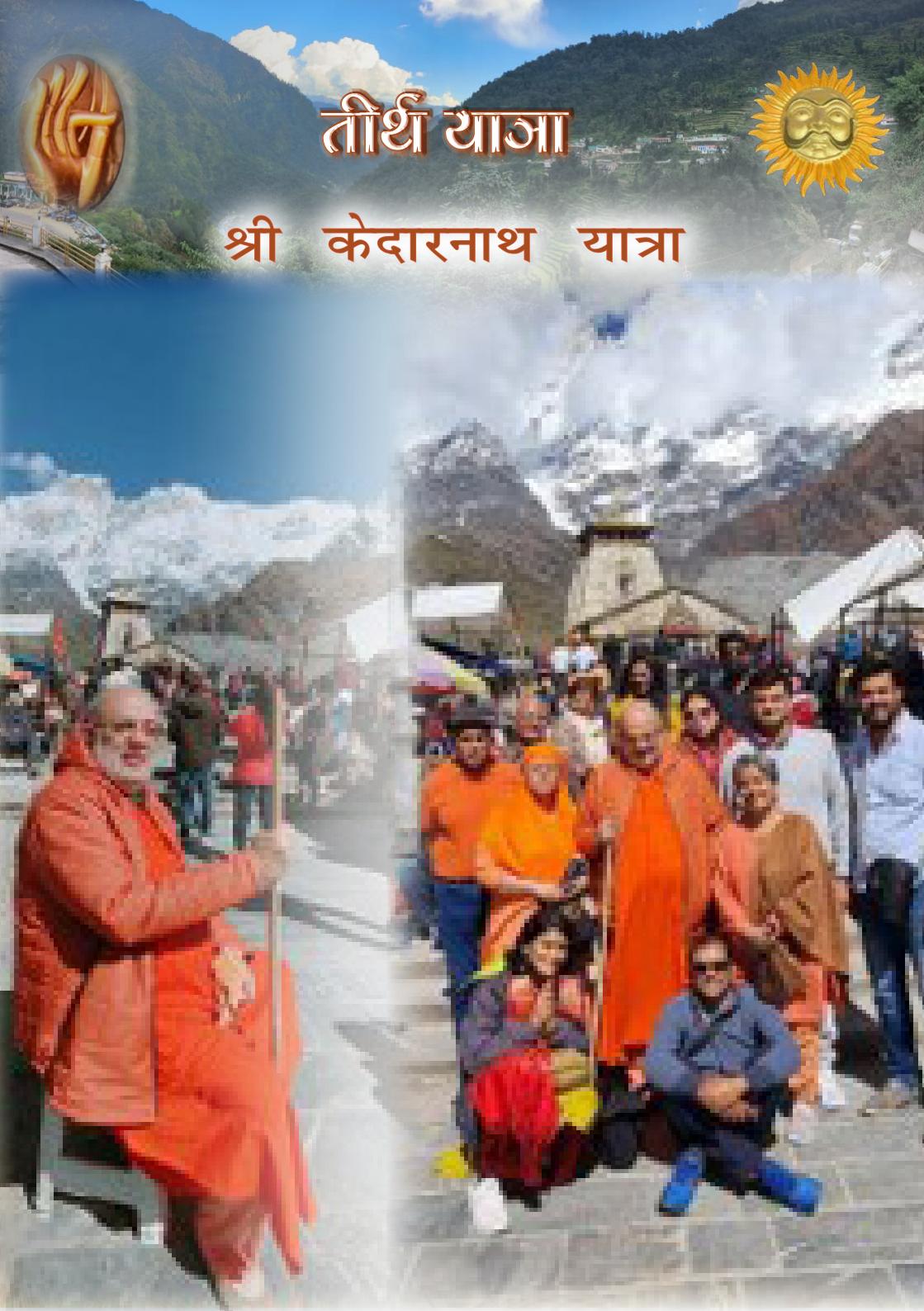
तीर्थ यात्रा
श्री केदारनाथ यात्रा

तीर्थ यात्रा
आदि शंकराचार्य समाधि

तीर्थ यात्रा
उखी मठ
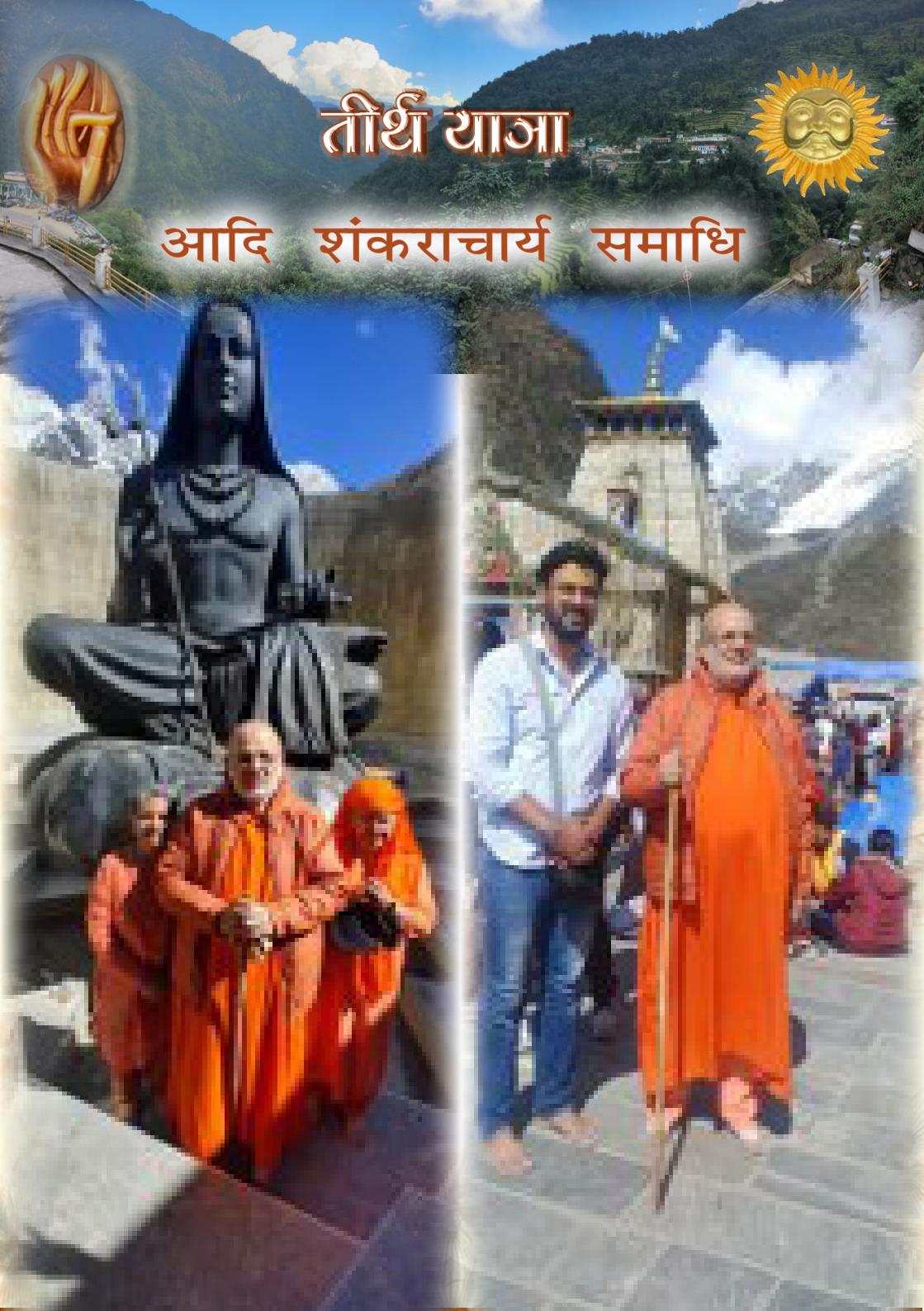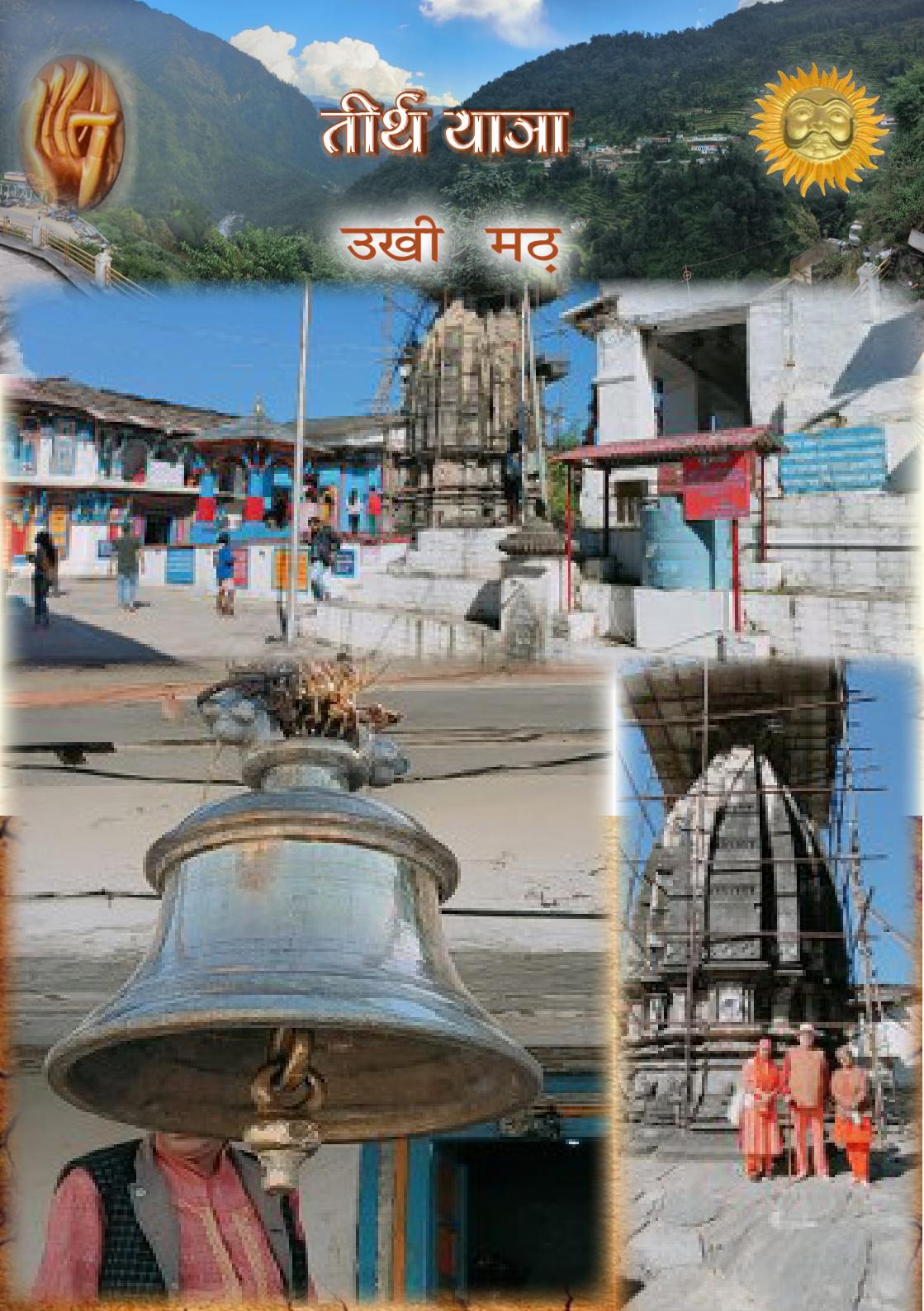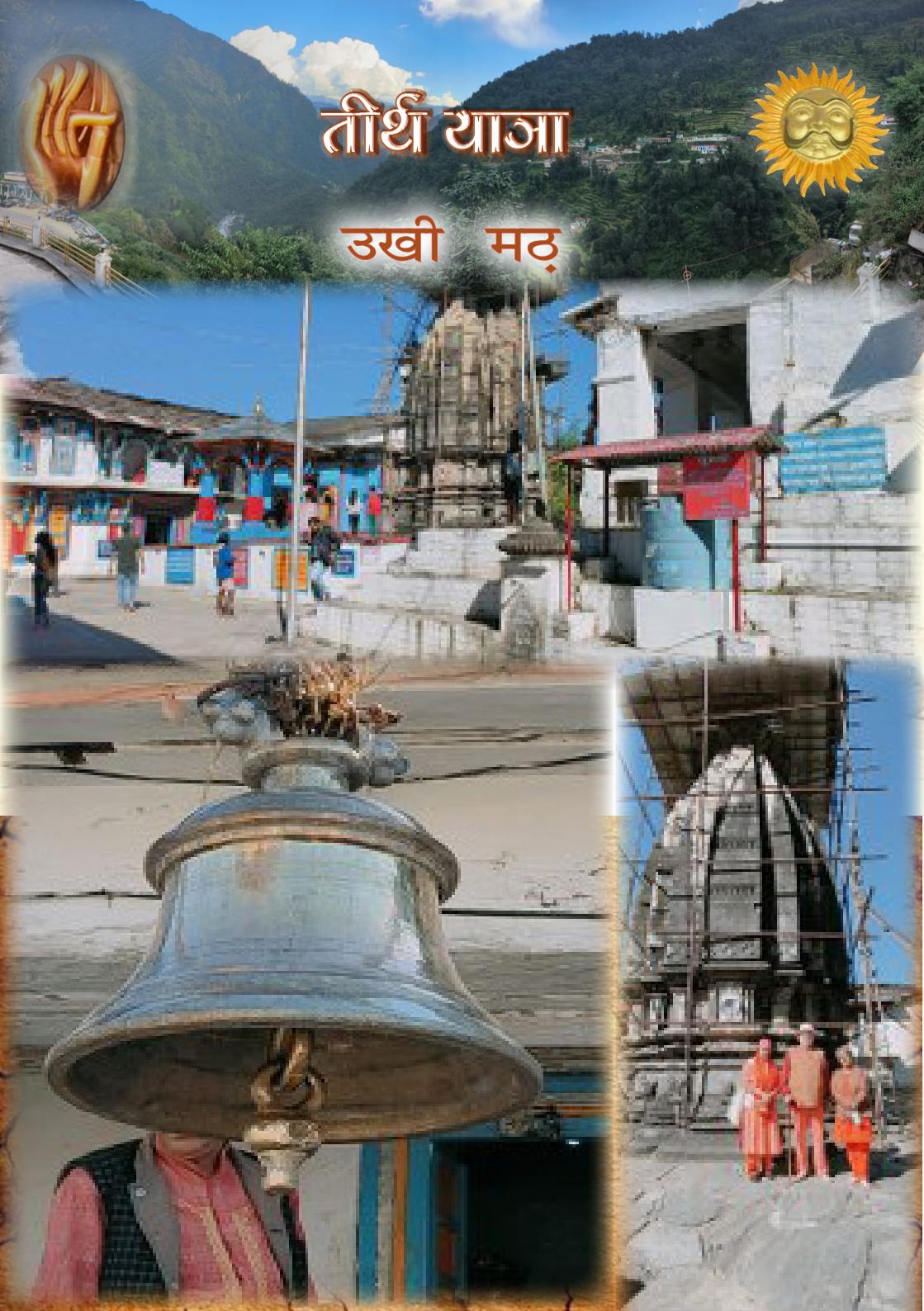
तीर्थ यात्रा
त्रियुगी नारायण मन्दिर

Internet News

Talks on (by P. Guruji):

Video Pravachans on YouTube Channel

~ Gita Ch. 12

~ Gita Ch. 17

~ Sadhna Panchakam

~ Drig-Drushya Vivek

~ Upadesh Saar

~ Atma Bodha Pravachan

- Sundar Kand Pravachan

~ Prerak Kahaniya

- Ekshloki Pravachan

~ Sampoorna Gita Pravachan

INTERNET

- Kathopanishad Pravachan

- Shiva Mahimna Pravachan

- Hanuman Chalisa

~ Laghu Vakya Vrittu (Sw. Amitananda in Guj)

~ Shiv Mahimna Stotram (Sw. Samatananda)

Online Ongoing Programs

Prerak Kahaniyan

by Swamini Poornanandaji

Shiv Mahimna Stotram & Gita Chanting

by Sw. Samatanandaji

Published Once a week in VDS Group

Internet

Audio Pravachans

~ Sadhna Panchakam

~ Drig Drushya Vivek

~Upadesh Saar

~ Prerak Kahaniya

~ Sampoorna Gita Pravachan

~ Atmabodha Lessons

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

~ Vedanta Sandesh - Nov '22

~ Vedanta Piyush - Oct '22

आश्रम / मिशन कार्यक्रम

वेदान्त आश्रम में

गीताकक्षा का आरम्भ

सम्पूर्णगीता अध्ययन – शांकरभाष्य के साथ

पूज्य गुरुजी के द्वारा

आश्रम / मिशन कार्यक्रम

गीता जयन्ति कार्यक्रम

फूटीकोठ़ी, गीता भवन, इन्दौर

3 दिसम्बर 2022

पूज्य गुरुजी के द्वारा

गीता ज्ञान यज्ञ

रामकृष्ण केन्द्र, अहमदाबाद

5 से 11 दिसम्बर 2022

पू. स्वामिनी अमितानन्दजी के द्वारा

गीता ज्ञान यज्ञ

गोकुल धाम, गोरेगांव

5 से 11 दिसम्बर 2022

पू. स्वामिनी समतानन्दजी के द्वारा

आश्रम / मिशन कार्यक्रम

हालिस्टिक लिवींग कार्यक्रम

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

15 दिसम्बर 2022

पूज्य गुरुजी के द्वारा

एक दिवसीय शिविर (जन्म-मृत्यु रहस्य)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

16 दिसम्बर 2022

पू. गुरुजी के द्वारा

गीता ज्ञान यज्ञ

आत्मज्योति आश्रम, बड़ौदा

5 से 12 जनवरी 2023

पू. स्वामिनी अमितानन्दजी के द्वारा

आश्रम / मिशन कार्यक्रम

गीता ज्ञान यज्ञ

अमरावती

5 से 11 जनवरी 2023

पू. स्वामिनी समतानन्दजी के द्वारा

वेदान्त शिविर

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

13 से 17 फरवरी 2023

पू. गुरुजी एवं आश्रम महात्मागण द्वारा

गीता ज्ञान यज्ञ

जलगांव

14 से 20 मार्च 2023

पू. स्वामिनी पूर्णानन्दजी के द्वारा